'भ्रमरगीत' में उद्धव का चरित्र

डॉ. ऊषा रानी मलिक
शिक्षा विभाग
महाराजा सूरजमल संस्थान
जनकपुरी, नई दिल्ली।

सारांशिका

भ्रमरगीत में उद्धव का चित्रण देखने को मिलता है जिसके आधार पर सूरदास ने भी अपने काव्य में उसका उल्लेख किया है। सर्वप्रथम उद्धव का चरित्र 'श्रीमद्भागवत' की भ्रमरगीत–कथा' में देखने को मिलता है। इसके अनुसार मथुरा में श्रीकृष्ण उद्धव को अपना यथायोग्य सन्देश देकर ब्रज में भेजते हैं। ब्रज में माता–पिता ग्वाल–बालों और गोपियों को सान्त्वना देने के उद्धव को ब्रज में भेजते हैं–''सौम्य उद्धव! तुम ब्रज जाओ, मेरे माता–पिता को प्रसन्न करो और ब्रज–बालाओं की मानसिक व्यथा को, मेरा सन्देश देकर, दूर करो।'' उद्धव कृष्ण की आज्ञा का पालन करते हैं। वह गोपियों से न तो शास्त्रार्थ करते हैं, न वाद–विवाद। न तो उन्होंने निर्गुण की महिमा गाई है और योग–धारण के उपदेश दिये हैं बल्कि स्थान–स्थान पर अपनी राय देकर गोपियों को सान्त्वना देने का प्रयास अवश्य किया है। गोपियाँ भी उद्धव पर न तो खीजती हैं, न आक्रोश प्रकट करती हैं और वह विरह–कथा नहीं सुनाती है। इतना नहीं बल्कि कृष्ण कुब्जा के लिये ईर्ष्या भरे सन्देश भेजती है। यहाँ पर उनके उपालम्भ और व्यंग्यों का भी अभाव है। इसलिए अन्त में, उद्धव की सलाह मान गोपियाँ सन्तोष कर लेती है।

मुख्य शब्द : भ्रमरगीत, उद्धव, सूरदास, गोपियाँ, कृष्ण प्रेम।

प्रस्तावना

भ्रमरगीत में उद्धव का चित्रण देखने को मिलता है जिसके आधार पर सूरदास ने भी अपने काव्य में उसका उल्लेख किया है। सर्वप्रथम उद्धव का चरित्र 'श्रीमद्भागवत' की भ्रमरगीत–कथा' में देखने को मिलता है। इसके अनुसार मथुरा में श्रीकृष्ण उद्धव को अपना यथायोग्य सन्देश देकर ब्रज में भेजते हैं। ब्रज में माता–पिता ग्वाल–बालों और गोपियों को सान्त्वना देने के उद्धव को ब्रज में भेजते हैं–''सौम्य उद्धव! तुम ब्रज जाओ, मेरे माता–पिता को प्रसन्न करो और ब्रज–बालाओं की मानसिक व्यथा को, मेरा सन्देश देकर, दूर करो।'' उद्धव कृष्ण की आज्ञा का पालन करते हैं। वह गोपियों से न तो शास्त्रार्थ करते हैं, न वाद–विवाद। न तो उन्होंने निर्गुण की महिमा गाई है और योग–धारण के उपदेश दिये हैं बल्कि स्थान–स्थान पर अपनी राय देकर गोपियों को सान्त्वना देने का प्रयास अवश्य किया है। गोपियाँ भी उद्धव पर न तो खीजती हैं, न आक्रोश प्रकट करती हैं और वह विरह–कथा नहीं सुनाती है। इतना नहीं बल्कि कृष्ण कुब्जा के लिये ईर्ष्या भरे सन्देश भेजती है। यहाँ पर उनके उपालम्भ और व्यंग्यों का भी अभाव है। इसलिए अन्त में, उद्धव की सलाह मान गोपियाँ सन्तोष कर लेती है। महाकवि सूरदास ने 'भ्रमर गीत'–प्रसंग के साथ–साथ उद्धव के चरित्र को भी 'श्रीमद्भागवत' से ग्रहण किया है। सूरदास ने पूर्णतया नये रुप में उद्धव चरित्र को ढालकर अपने 'भ्रमरगीत' में चित्रित किया है। इसका परिणाम यह हुआ है कि सूरदास के यहाँ आकर उद्धव और उनका चरित्र एकदम बदल गये हैं। अतः प्रमाण है–'भ्रमरगीत' में उद्धव के चरित्र की चारित्रिक विशेषताएँ हमें देखने को मिलती है। 'भ्रमरगीत' के उद्धव कट्टर निर्गुणोपासक हैं। उनसे पहली भेंट, ग्रन्थारम्भ में ही, 'कृष्ण–उद्धव संवाद' में देखने को मिलती है। यहाँ पर श्रीकृष्ण स्वयं उद्धव के सम्बन्ध में कहते हैं–

'उद्धव! यह मन निश्चय जानो।
मन कम बच मैं तुम्हें पठावत ब्रज को तुरत पलानो।।
पूरन ब्रह्म, सकल अविनासी ताकै तुम हौ ज्ञाता।''

इस सम्बन्ध में **आचार्य राम चन्द्र शुक्ल** ने कहा है, 'उद्धव ही को क्यों भेजा ? कारण यह था कि उद्धव को अपने ज्ञान का बड़ा गर्व था, प्रेम या भक्ति–मार्ग की वे उपेक्षा करते थे। कृष्ण का उन्हें गोपियों के पास भेजने में यह अभिप्राय था कि वे उनकी प्रीति की गूढ़ता और तन्मयता देखकर शिक्षा ग्रहण करें और सगुण भक्ति–मार्ग की सरसता और सुगमता के सामने उनका ज्ञान–गर्व दूर हो।'' स्वयं उद्धव का आत्म विश्वास, कृष्ण–चाल को समझ न पाने के कारण बढ़ने लगता है–

'उद्धव मन अभिलाष बढ़ायो।
जदुपति जोग जानि जिय सांचो, नयन अकास चढ़ायो।।''

जब उद्धव ब्रज आते हैं और शीघ्र ही उनका निर्गुणोपासना की साधना को गोपियों को समझाते हैं। वह चुन–चुनकर, अपनी ओर से सभी सम्भव तर्क, उदाहरण, दृष्टांत आदि देकर निर्गुण और उसकी उपासना के समझाने लगते हैं। जैसे यह उदाहरण इसी प्रमाण के परिचायक हैं–

''वे अविगत, अविनासी, पूरन, घट–घट रहे समाय।
तिहि निश्चय कै ध्यावहु ऐसे सुचित कमल मन लाय।।
तत्व ज्ञान बिनु मुक्ति न होई निगम सुनावत गाय।'

वस्तुतः निर्गुणोपासक होने के कारण उद्धव का ज्ञान मार्गी होना स्वाभाविक है। उद्धव को साथ ही साथ अपने ज्ञान मार्गी होने पर गर्व भी है क्योंकि ग्रन्थ के प्रारम्भ में ही ''मन ही मन अब करत प्रसंग है मिथ्या सुख–भोग'' सोचकर और ''मैं क्यों कहूँ की आन'' कह कर वह स्वीकार भी कर लेते हैं। गोपियों को उद्धव अपने सन्देश में तप, भभूत, सुषुम्ना, पिंगला आदि नाड़ियों की सलाह

देते हैं। नाद, मेखला आदि को ग्रहण करने की सलाह भी देते हैं। उद्धव का यही ज्ञानपरक योग प्रिय होता है। इसलिए उद्धव का यह रुप देखने को मिलता है। देखिए :–

''ऊधो को उपदेस सुनौ किन कान दै ?''

''ज्ञान नैन जो अन्ध ताहि सूझै धौं कैसे ?'' तथा

''ऊधो जोग सिखचन आए।

सिंधि, भस्म, अधारी, मुद्रा लै ब्रजनाथ पठाए।।''

यहाँ पर उद्धव के योग ज्ञान की स्थिति स्पष्ट देखी जा सकती है। 'भ्रमरगीत' के उद्धव ज्ञानी और निर्गुण–साधना के उच्च कोटि संत हैं। किन्तु गोपियाँ उनकी उच्चता को भी हवा में धूल की तरह उड़ा देती हैं। वास्तव में कि गोपियाँ उद्धव को बोलने का और अपनी बात को स्पष्ट करने का अवसर नहीं देती बल्कि गोपियाँ कृष्ण प्रेम धुन में स्वयं ही धारावाहिक बोल रही हैं। ऐसी स्थिति में उद्धव जोर–जबरदस्ती में फिर भी दो–चार उपदेश कह देते हैं। उद्धव आद्योपान्त गोपियों की बातें ही सुनते रहते हैं। यहाँ तक होता है कि अन्त तक आते–आते उद्धव बिल्कुल ही आत्म–समर्पण–गोपियों के सामने कर देते हैं। इस तरह से देखा जाये तो निःसन्देह उद्धव का व्यक्तित्व गोपियों के सम्मुख एकदम परास्त हो जाता है। अतः ग्रन्थारम्भ में ही गोपियों के सत्कार–भाव को देखते ही उद्धव प्रेम मग्न हो जाते हैं और वह सोचते हैं कि गोपियों को समझा लेंगे। किन्तु उनका ज्ञान–गर्व तिनके की भाँति उड़ जाता है :–

''पूछि कुसल गोपाल की रहीं सकल गहि पांय।

प्रेम–मग्न ऊधो भए, हो, देखत ब्रज को भाय।।

मन मन ऊधो कहै यह न बूझिये गोपालहि।...

देखि प्रेम गोपीन को, हो, ज्ञान–गरब गयो दूरि।।''

कवि सूरदास ने गोपियों के धारा–प्रवाह विरह–चित्रण में उद्धव को बोलने का अवसर ही नहीं देता और प्रारम्भ में ही उद्धव को पराभूत करा देता है। इस सम्बन्ध में **डॉ. पुष्प पाल सिंह** के शब्दों को देख सकते हैं कि ''उद्धव–पक्ष के प्रति कवि पूर्ण न्याय नहीं कर सका है। उन्होंने (सूर ने) उद्धव का व्यक्तित्व पराभूत ही रखा है जबकि तत्व मर्मज्ञ के नाते उन्हें अपने विचार प्रस्तुत करने का उचित स्थान मिलना चाहिए था।'' यहाँ पर निःसन्देह 'भ्रमरगीत' के उद्धव सहानुभूति के पात्र हैं किन्तु उनको यहाँ पर न तो कवि सहानुभूति दे पाया है और न कथा के अन्य पात्र। इसलिए कृष्ण उनके ज्ञान–गर्व को खण्डित करना चाहते हैं और गोपियाँ तो उनको तानाजनी और व्यंग्य से लेकर कटुतर उक्तियों तक पर उतर आती हैं। इसका सबसे बड़ा कारण कवि की 'सगुण प्रेमा भक्ति' की प्रतिष्ठा करना रहा है। इसके लिए उसने एक ओर तो गोपियों के अनन्य प्रेम–भाव को प्रतिष्ठित किया है और उससे भी कहीं अधिक उद्धव (जैसे तत्व–चिन्तक, ज्ञानी और निर्गुण पक्ष के समर्थक) का डटकर मजाक उड़वाया है। वास्तविकता यह है उद्धव के चरित्रांकन में कवि सूरदास मुख्यतः अपने पूर्व और समकालीन निर्गुण भक्ति धारा के अनुयायियों से प्रभावित–प्रेरित हुआ है। इस ओर **श्री रामधारी सिंह दिनकर** का यह कथन देखिए 'सूर के उद्धव कृष्ण के उद्धव नहीं, बल्कि कबीर की बुझती हुई निर्गुण परम्परा के प्रतीक हैं।'' उद्धव के चरित्रांकन में कविवर सूरदास का विरोधी दृष्टिकोण छिप नहीं पाया है और इसी कारण से उद्धव का चरित्र गोपियों की दृष्टि से प्रभावहीन होकर रह गया है। भ्रमर जिस तरह से एक पुष्प का रस पाकर फिर उसे ठुकरा कहो पुष्प पर चला जाता है ठीक वैसा व्यवहार कृष्ण कर रहे हैं। श्री कृष्ण ने भी ऐसी शठता की है क्योंकि कृष्ण प्रेम करके गोपियों को छोड़कर चले गये हैं। देखिए–

अपने स्वार्थ को सब कोउ, चुप करि रहे, मधुप रस लंपट ! तुम देखे अस दोऊ।।

इस सम्बन्ध में डॉ. स्नेहलता श्रीवास्तव कहती हैं कि – भ्रमरगीत में भ्रमर की भाँति अस्पष्ट उपदेश देने वाले उद्धव ज्ञान अथवा निराकार के प्रतिनिधि हैं। ज्ञान पर प्रेम की, मस्तिष्क पर हृदय की विजय दिखाकर निर्गुण निराकार ब्रह्म की उपासना की अपेक्षा सगुण साकार ब्रह्म की श्रेष्ठता का प्रतिपादन करना ही भ्रमरगीत का इष्ट है।''

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

- भ्रमरगीत सार : आमुख – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल–पृ. सं. 8
- डॉ. सुरेश चन्द निर्मल–सूर और उनका भ्रमरगीत–पृ सं. 114
- डॉ. सुरेश चन्द निर्मल–सूर और उनका भ्रमरगीत–पृ सं. 115
- डॉ. स्नेहलता श्रीवास्तव – हिन्दी में भ्रमरगीत काव्य और उसकी परम्परा – पृ. सं. 117